अंशपूँजी के लिए लेखांकन

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कंपनी का अर्थ और उसकी विशेषताएँ

प्रश्न 1 (आसान). सही या गलत बताएं: एक कंपनी का अस्तित्व उसके मालिकों से अलग नहीं होता।
उत्तर – गलत

प्रश्न 2 (आसान). कंपनी के सदस्यों का दायित्व कैसा होता है? (सीमित / असीमित)
उत्तर – सीमित

प्रश्न 3 (मध्यम). किस अधिनियम के तहत भारत में कंपनियां मुख्य रूप से पंजीकृत होती हैं?
उत्तर – कंपनी अधिनियम, 2013

प्रश्न 4 (कठिन). अगर किसी कंपनी के सारे शेयरहोल्डर (अंशधारक) बदल जाएं, तो क्या कंपनी बंद हो जाएगी? क्यों?
उत्तर – नहीं, कंपनी बंद नहीं होगी। क्योंकि कंपनी का 'स्थायी उत्तराधिकार' होता है और इसका अस्तित्व इसके सदस्यों से 'पृथक' होता है। सदस्य आते-जाते रहते हैं पर कंपनी चलती रहती है।

» कंपनी के प्रकार

प्रश्न 5 (आसान). एक 'निजी कंपनी' में अधिकतम कितने सदस्य हो सकते हैं (कर्मचारियों को छोड़कर)?
उत्तर – 200

प्रश्न 6 (आसान). किस प्रकार की कंपनी में सदस्यों का दायित्व उनके द्वारा खरीदे गए शेयरों के मूल्य तक सीमित होता है?
उत्तर – अंशों द्वारा सीमित कंपनी

प्रश्न 7 (मध्यम). 'एकल व्यक्ति कंपनी' (OPC) में कितने व्यक्ति होते हैं? क्या यह अपनी शेयर जनता को बेच सकती है?
उत्तर – OPC में केवल एक ही व्यक्ति होता है। नहीं, यह अपनी शेयर जनता को नहीं बेच सकती।

प्रश्न 8 (कठिन). एक कंपनी 'गारंटी द्वारा सीमित कंपनी' है। इसके एक सदस्य ने ₹50,000 की गारंटी दी है। यदि कंपनी को ₹10 लाख का नुकसान होता है, तो क्या वह सदस्य ₹50,000 तुरंत देगा? कब देगा?
उत्तर – नहीं, वह सदस्य ₹50,000 तुरंत नहीं देगा। उसका दायित्व तभी उत्पन्न होगा जब कंपनी का समापन होगा (यानी जब कंपनी बंद हो रही होगी), उस समय उसे अपनी गारंटी की राशि का भुगतान करना होगा।

» कंपनी की अंशपूँजी

प्रश्न 9 (आसान). अंशपूँजी क्या है?
उत्तर – कंपनी द्वारा अंशों को बेचकर जुटाई गई पूँजी।

प्रश्न 10 (आसान). अंशधारक किसे कहते हैं?
उत्तर – जो व्यक्ति कंपनी के अंश खरीदते हैं।

प्रश्न 11 (मध्यम). एक कंपनी ने ₹50 वाले 5,000 समता अंश जारी किए। उसकी कुल अंशपूँजी कितनी होगी?
उत्तर – ₹2,50,000

प्रश्न 12 (कठिन). कंपनी में अंशपूँजी खाते की ज़रूरत क्यों पड़ती है, जब हर अंशधारक का अपना पैसा होता है?
उत्तर – कंपनी में हज़ारों-लाखों अंशधारक होते हैं, हर किसी का अलग खाता बनाना असंभव है। इसलिए सभी की पूँजी को एक साथ अंशपूँजी खाते में दिखाया जाता है।

» अंशपूँजी का वर्गीकरण

प्रश्न 13 (आसान). वह अधिकतम पूँजी क्या कहलाती है जो एक कंपनी अपने जीवनकाल में जारी कर सकती है?
उत्तर – अधिकृत पूँजी

प्रश्न 14 (आसान). निर्गमित पूँजी का वह हिस्सा जो जनता द्वारा वास्तव में खरीदा जाता है, उसे क्या कहते हैं?
उत्तर – अभिदत्त पूँजी

प्रश्न 15 (मध्यम). अगर एक कंपनी के पास 5,00,000 रुपये की अधिकृत पूँजी है (10 रुपये प्रति अंश) और उसने 2,00,000 रुपये के अंश जारी किए, तो निर्गमित अंशों की संख्या क्या होगी?
उत्तर – 20,000 अंश (2,00,000 / 10)

प्रश्न 16 (कठिन). एक कंपनी ने 1,00,000 अंश (10 रुपये प्रति अंश) जारी किए, 8 रुपये प्रति अंश माँगे गए, और सभी पैसे मिल गए सिवाय 500 अंशों पर अंतिम माँग (3 रुपये प्रति अंश) के। माँगी गई पूँजी और प्रदत्त पूँजी क्या होगी?
उत्तर – माँगी गई पूँजी: 1,00,000 * 8 = 8,00,000 रुपये। प्रदत्त पूँजी: 8,00,000 - (500 * 3) = 8,00,000 - 1,500 = 7,98,500 रुपये।

» अंशों की श्रेणियाँ एवं प्रकृति (पूर्वाधिकार और समता अंश)

प्रश्न 17 (आसान). कौन से अंशों पर लाभांश की दर निश्चित होती है?
उत्तर – पूर्वाधिकार अंश

प्रश्न 18 (आसान). कंपनी के समापन पर सबसे पहले पूंजी की वापसी किन्हें मिलती है?
उत्तर – पूर्वाधिकार अंशधारियों को

प्रश्न 19 (मध्यम). एक कंपनी ने 2,00,000 रुपये का लाभ कमाया। उसके पास 5,000, 8% पूर्वाधिकार अंश (₹100 प्रत्येक) और 20,000 समता अंश (₹10 प्रत्येक) हैं। समता अंशधारियों को लाभांश के लिए कितनी राशि उपलब्ध होगी?
उत्तर – ₹1,60,000 (पूर्वाधिकार लाभांश 5,000*100*8% = 40,000, लाभ - पूर्वाधिकार लाभांश = 2,00,000 - 40,000 = 1,60,000)

प्रश्न 20 (कठिन). पूर्वाधिकार अंशों के कितने मुख्य अधिकार होते हैं? संक्षेप में समझाइए।
उत्तर – पूर्वाधिकार अंशों के दो मुख्य अधिकार होते हैं: पहला, लाभांश भुगतान में प्राथमिकता (समता अंशधारियों से पहले एक निश्चित दर पर लाभांश मिलता है); दूसरा, कंपनी के समापन पर पूंजी की वापसी में प्राथमिकता (समता अंशधारियों से पहले उनकी पूंजी वापस मिलती है)।

» अंशों का निर्गमन: प्रक्रिया और लेखांकन व्यवहार

प्रश्न 21 (आसान). अंश निर्गमन की प्रक्रिया का पहला चरण क्या है?
उत्तर – विवरण-पत्रिका जारी करना।

प्रश्न 22 (आसान). अगर न्यूनतम अभिदान प्राप्त न हो तो कंपनी को क्या करना पड़ता है?
उत्तर – आवेदन राशि लौटानी पड़ती है।

प्रश्न 23 (मध्यम). एक कंपनी ने 5,000 अंश ₹10 पर जारी किए, आवेदन पर ₹2 मिले। इस लेन-देन की जर्नल प्रविष्टि क्या होगी?
उत्तर – बैंक खाता डेबिट ₹10,000 और अंश आवेदन खाता क्रेडिट ₹10,000।

प्रश्न 24 (कठिन). अगर कंपनी को जारी किए गए अंशों का 85% अभिदान मिलता है, तो क्या वह अंश आवंटित कर सकती है? क्यों या क्यों नहीं?
उत्तर – नहीं, कंपनी अंश आवंटित नहीं कर सकती क्योंकि SEBI के दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनतम अभिदान जारी किए गए अंशों का कम से कम 90% होना चाहिए।

» बकाया माँग (Calls in Arrears)

प्रश्न 25 (आसान). अगर एक अंशधारी ने ₹3 प्रति अंश की अंतिम माँग राशि का भुगतान नहीं किया, और उसके पास 150 अंश हैं, तो बकाया माँग की राशि क्या होगी?

उत्तर – ₹450

प्रश्न 26 (आसान). बकाया माँग को तुलन-पत्र में किस तरफ दिखाया जाता है?

उत्तर – दायित्व पक्ष में, चुकता पूँजी से घटाकर।

प्रश्न 27 (मध्यम). गीता लिमिटेड ने 5000 अंशों पर ₹4 की द्वितीय माँग की। एक अंशधारी जिसके पास 100 अंश थे, उसने भुगतान नहीं किया। जर्नल प्रविष्टियाँ करें यदि बकाया माँग खाता खोला जाता है।

उत्तर – माँग देय होने पर: अंश द्वितीय माँग खाता Dr. ₹20,000; अंशपूँजी खाते से Cr. ₹20,000।

माँग प्राप्त होने पर: बैंक खाता Dr. ₹19,600; बकाया माँग खाता Dr. ₹400; अंश द्वितीय माँग खाते से Cr. ₹20,000।

प्रश्न 28 (कठिन). प्रकाश लिमिटेड ने 10 रुपये वाले 10,000 समता अंश जारी किए। आवेदन पर 3 रुपये, आबंटन पर 3 रुपये, प्रथम माँग पर 2 रुपये और अंतिम माँग पर 2 रुपये। एक अंशधारी जिसके पास 500 अंश थे, उसने प्रथम और अंतिम माँग का भुगतान नहीं किया। कंपनी के अंतर्नियमों के अनुसार बकाया माँग पर 10% वार्षिक ब्याज देय है। यदि अंशधारी ने 3 महीने बाद बकाया राशि ब्याज सहित चुका दी, तो ब्याज की गणना और उसकी प्राप्ति की जर्नल प्रविष्टि करें।

उत्तर – प्रथम माँग बकाया: 500 अंश x ₹2 = ₹1000। अंतिम माँग बकाया: 500 अंश x ₹2 = ₹1000। कुल बकाया ₹2000।

ब्याज = ₹2000 x 10% x (3/12) = ₹50।

ब्याज प्राप्ति की प्रविष्टि: बैंक खाता Dr. ₹50; बकाया माँग पर ब्याज खाते से Cr. ₹50।

» अग्रिम माँग (Calls in Advance)

प्रश्न 29 (आसान). अग्रिम माँग कंपनी के लिए 'संपत्ति' है या 'दायित्व'?

उत्तर – दायित्व।

प्रश्न 30 (आसान). अगर पार्षद अंतर्नियमों में अग्रिम माँग पर ब्याज दर नहीं लिखी है, तो कौन सी तालिका लागू होगी?

उत्तर – तालिका F।

प्रश्न 31 (मध्यम). अग्रिम माँग पर कंपनी अधिकतम कितने प्रतिशत वार्षिक ब्याज का भुगतान कर सकती है (तालिका F के अनुसार)?

उत्तर – 12%।

प्रश्न 32 (कठिन). अग्रिम माँग को तुलन-पत्र में किस शीर्षक के अंतर्गत दिखाया जाता है?

उत्तर – मुख्य शीर्षक 'चालू दायित्व' के उप-शीर्षक 'अन्य चालू दायित्व' के अंतर्गत।

» अधि-अभिदान (Over-subscription) और आनुपातिक आबंटन

प्रश्न 33 (आसान). जब कंपनी 5000 अंश जारी करती है और 6000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त होते हैं, तो यह क्या कहलाता है?

उत्तर – अधि-अभिदान (Over-subscription)

प्रश्न 34 (आसान). अधि-अभिदान की स्थिति में, क्या कंपनी सभी आवेदकों को अंश दे सकती है?

उत्तर – नहीं, केवल निर्गमित अंशों की संख्या तक ही अंश दे सकती है।

प्रश्न 35 (मध्यम). एक कंपनी ने 20,000 अंश जारी किए और 25,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। संचालकों ने 5,000 आवेदनों को अस्वीकृत कर दिया और बाकी को पूर्ण आवंटन किया। अस्वीकृत आवेदनों की राशि का क्या होगा?

उत्तर – अस्वीकृत आवेदनों की राशि आवेदकों को वापस कर दी जाएगी।

प्रश्न 36 (कठिन). एक कंपनी ने 10,000 अंश जारी किए और 15,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। कंपनी ने सभी 15,000 आवेदकों को आनुपातिक आधार पर आवंटन किया। आवेदन पर प्राप्त अतिरिक्त राशि का क्या होगा?
उत्तर – आवेदन पर प्राप्त अतिरिक्त राशि को अंश आवंटन पर देय राशि के साथ समायोजित किया जाएगा।

» न्यून अभिदान (Under-subscription)

प्रश्न 37 (आसान). अगर एक कंपनी ने 50,000 अंशों का ऑफर किया और उसे 48,000 अंशों के लिए आवेदन मिले, तो यह किस प्रकार की स्थिति है?
उत्तर – न्यून अभिदान (Under-subscription)

प्रश्न 38 (आसान). न्यूनतम अभिदान की शर्त क्या है? (प्रतिशत में)
उत्तर – 90%

प्रश्न 39 (मध्यम). एक कंपनी ने 2,00,000 अंश जारी किए। न्यूनतम अभिदान की शर्त 90% थी। अगर उसे 1,70,000 अंशों के लिए आवेदन मिले, तो क्या कंपनी अंशों का आवंटन कर सकती है?
उत्तर – नहीं, क्योंकि 2,00,000 का 90% = 1,80,000 होता है और आवेदन सिर्फ 1,70,000 के लिए मिले, जो 1,80,000 से कम है। ऐसे में कंपनी को आवेदन राशि वापस करनी पड़ेगी।

प्रश्न 40 (कठिन). कंपनी 'ज्ञानोदय लिमिटेड' ने 80,000 समता अंश जारी किए (प्रत्येक 10 रुपये का)। न्यूनतम अभिदान 90% था। कंपनी को 70,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। आवेदन पर 3 रुपये, आवंटन पर 4 रुपये और शेष प्रथम व अंतिम माँग पर देय था। क्या कंपनी आवंटन कर सकती है? यदि हाँ, तो कितने अंशों का?
उत्तर – नहीं, कंपनी आवंटन नहीं कर सकती। 80,000 अंशों का 90% = 72,000 अंश। चूंकि केवल 70,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए, जो कि 72,000 से कम है, कंपनी को सभी आवेदन राशि वापस करनी होगी।

» अंशों का अधि-मूल्य (Premium) पर निर्गमन

प्रश्न 41 (आसान). अगर एक शेयर का अंकित मूल्य 100 रुपये है और उसे 110 रुपये में जारी किया गया है, तो प्रीमियम की राशि कितनी है?
उत्तर – 10 रुपये

प्रश्न 42 (आसान). अधि-मूल्य पर अंश जारी करने वाली कंपनी आमतौर पर कैसी होती है?
उत्तर – आमतौर पर वित्तीय रूप से सुदृढ़ और अच्छे प्रबंधन वाली।

प्रश्न 43 (मध्यम). प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते में जमा राशि का उपयोग किन उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है? कोई दो उद्देश्य बताएं।
उत्तर – पूर्ण भुगतान बोनस अंश के निर्गमन पर, कंपनी के प्रारंभिक व्ययों का अपलेखन।

प्रश्न 44 (कठिन). एक कंपनी ने 100 रुपये वाले 5,000 अंश 20% प्रीमियम पर जारी किए। प्रीमियम की राशि आबंटन पर देय थी। आबंटन पर प्रीमियम की कुल राशि की गणना करें।
उत्तर – 5,000 अंश × (100 रुपये का 20%) = 5,000 अंश × 20 रुपये = 1,00,000 रुपये।

» अंशों का बट्टे (Discount) पर निर्गमन

प्रश्न 45 (आसान). क्या एक सामान्य कंपनी अपने अंशों को डिस्काउंट पर जारी कर सकती है?
उत्तर – नहीं, सामान्यतः एक कंपनी अपने अंशों को डिस्काउंट पर जारी नहीं कर सकती।

प्रश्न 46 (आसान). अंशों को बट्टे पर निर्गमित करने का क्या मतलब है?
उत्तर – इसका मतलब है, जब कंपनी अपने अंशों को उनके अंकित मूल्य (Face Value) से कम कीमत पर बेचती है।

प्रश्न 47 (मध्यम). कौन सी दो विशेष परिस्थितियाँ हैं जब कंपनी अंशों को डिस्काउंट पर जारी कर सकती है?

उत्तर – हरण किए गए अंशों का पुनः निर्गमन (Re-issue of Forfeited Shares) और स्टेट इक्विटी अंशों (Sweat Equity Shares) का नर्गिमन।

प्रश्न 48 (कठिन). यदि एक कंपनी अपने ₹50 वाले शेयर को ₹5 डिस्काउंट पर जारी करती है, तो प्रति शेयर निर्गमन मूल्य क्या होगा?

उत्तर – प्रति शेयर निर्गमन मूल्य = ₹50 - ₹5 = ₹45 होगा।

» रोकड़ के अतिरिक्त प्रतिफल में अंशों का निर्गमन

प्रश्न 49 (आसान). एक कंपनी ने ₹3,00,000 की मशीन खरीदी और ₹100 अंकित मूल्य वाले अंश सममूल्य पर जारी किए। कितने अंश जारी किए जाएंगे?

उत्तर – 3,000 अंश

प्रश्न 50 (आसान). यदि ₹1,00,000 की परिसंपत्ति के बदले ₹10 वाले अंश जारी किए गए, और 20% प्रीमियम था, तो प्रति अंश निर्गमन मूल्य क्या होगा?

उत्तर – ₹12 प्रति अंश

प्रश्न 51 (मध्यम). गीता लिमिटेड ने ₹6,60,000 में एक संयंत्र खरीदा। इसके लिए ₹100 अंकित मूल्य वाले अंश 10% प्रीमियम पर जारी किए गए। कितने अंश जारी होंगे?

उत्तर – 6,000 अंश

प्रश्न 52 (कठिन). रामा लिमिटेड ने ₹9,50,000 की एक इमारत खरीदी। ₹50,000 का नकद भुगतान किया गया और शेष राशि के लिए ₹100 अंकित मूल्य के अंश 25% प्रीमियम पर जारी किए गए। कितने अंश जारी किए जाएंगे?

उत्तर – 7,200 अंश

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए राम, श्याम और मोहन मिलकर 'तीरंदाज़ गारमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड' नाम की एक कंपनी बनाते हैं। कुछ समय बाद राम की मृत्यु हो जाती है। क्या कंपनी का अस्तित्व खत्म हो जाएगा?

› कंपनी एक 'कृत्रिम व्यक्ति' होती है, जिसे कानून बनाता है.

› कंपनी का अस्तित्व उसके सदस्यों (जैसे राम, श्याम, मोहन) से 'पृथक' होता है.

› इसलिए, किसी सदस्य की मृत्यु, दिवालियापन या पागलपन से कंपनी पर कोई असर नहीं पड़ता.

› कंपनी का 'स्थायी उत्तराधिकार' होता है, यानी सदस्य आते-जाते रहते हैं पर कंपनी चलती रहती है.

उत्तर – नहीं, राम की मृत्यु से 'तीरंदाज़ गारमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड' कंपनी का अस्तित्व खत्म नहीं होगा। कंपनी चलती रहेगी।

उदाहरण 2. मान लीजिए, एक कंपनी 'अंशों द्वारा सीमित कंपनी' है। इसमें एक सदस्य ने ₹100 वाले 1000 शेयर खरीदे थे। उसने अब तक ₹70 प्रति शेयर का भुगतान कर दिया है। यदि कंपनी पर ₹5 लाख का कर्ज हो जाता है, तो उस सदस्य का अधिकतम दायित्व कितना होगा?

› सदस्य द्वारा खरीदे गए कुल शेयर मूल्य = 1000 शेयर × ₹100 प्रति शेयर = ₹1,00,000

› सदस्य द्वारा भुगतान की गई राशि = 1000 शेयर × ₹70 प्रति शेयर = ₹70,000

› शेष देय राशि (जो अभी तक सदस्य ने चुकाई नहीं है) = ₹1,00,000 - ₹70,000 = ₹30,000

› अंशों द्वारा सीमित कंपनी में, सदस्य का दायित्व केवल उसके द्वारा खरीदे गए अंशों के वास्तविक मूल्य तक सीमित होता है। यदि उसने पूरी राशि नहीं चुकाई है, तो उसे केवल बची हुई राशि का ही भुगतान करना होगा।

उत्तर – उस सदस्य का अधिकतम दायित्व केवल ₹30,000 होगा, चाहे कंपनी पर कितना भी कर्ज क्यों न हो।

उदाहरण 3. एक कंपनी ने ₹10 वाले 10,000 समता अंश (equity shares) जारी किए। यदि सभी अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए और उन्हें आवंटित किया गया, तो कंपनी की अंशपूँजी की गणना करें।

› पहला कदम है कुल जारी किए गए अंशों की संख्या देखना, जो कि 10,000 है।

› दूसरा कदम है एक अंश का मूल्य देखना, जो कि ₹10 है।

› अब, कुल अंशों की संख्या को एक अंश के मूल्य से गुणा करेंगे।

› अंशपूँजी = 10,000 अंश * ₹10 प्रति अंश = ₹1,00,000।

उत्तर – कंपनी की अंशपूँजी ₹1,00,000 होगी।

उदाहरण 4. सनराइज़ कंपनी लिमिटेड 40,00,000 रुपये की पूँजी से पंजीकृत है, जो 10 रुपये प्रत्येक के 4,00,000 अंशों में विभाजित है। कंपनी ने 10 रुपये प्रत्येक के 2,00,000 अंश जनता को जारी किए। जनता ने 2,50,000 अंशों के लिए आवेदन किया, लेकिन कंपनी ने 2,00,000 अंश ही आवंटित किए। कंपनी ने अभी तक 8 रुपये प्रति अंश ही माँगे हैं, और 2,000 अंशों को छोड़कर, सभी ने पैसे दे दिए। अंशपूँजी को तुलन-पत्र में कैसे दिखाएंगे?

› **अधिकृत पूँजी:** कंपनी की अधिकतम सीमा है 4,00,000 अंश * 10 रुपये = 40,00,000 रुपये।

› **निर्गमित पूँजी:** कंपनी ने जनता को जारी किए 2,00,000 अंश * 10 रुपये = 20,00,000 रुपये।

› **अभिदत्त पूँजी:** जनता ने 2,50,000 के लिए आवेदन किया, पर आवंटित 2,00,000 ही हुए। तो, अभिदत्त पूँजी होगी 2,00,000 अंश * 10 रुपये = 20,00,000 रुपये।

› **माँगी गई पूँजी:** कंपनी ने केवल 8 रुपये प्रति अंश माँगे हैं। तो, 2,00,000 अंश * 8 रुपये = 16,00,000 रुपये।

› **प्रदत्त पूँजी:** 2,00,000 अंशों पर 8 रुपये माँगे गए, लेकिन 2,000 अंशों पर पैसे नहीं मिले। इसका मतलब (2,00,000 - 2,000) = 1,98,000 अंशों पर 8 रुपये मिले। तो, 1,98,000 * 8 = 15,84,000 रुपये। बकाया माँग 2,000 अंश * 8 रुपये = 16,000 रुपये। अतः, प्रदत्त पूँजी = माँगी गई पूँजी - बकाया माँग = 16,00,000 - 16,000 = 15,84,000 रुपये।

› **अयाचित पूँजी:** जो माँगे नहीं गए (10 - 8 = 2 रुपये प्रति अंश)। 2,00,000 अंश * 2 रुपये = 4,00,000 रुपये।

उत्तर – तुलन-पत्र में अंशपूँजी को इस तरह दिखाया जाएगा:

अधिकृत पूँजी: 40,00,000 रुपये

निर्गमित पूँजी: 20,00,000 रुपये

अभिदत्त और माँगी गई पूँजी: 16,00,000 रुपये

घटाओ: बकाया माँग: 16,000 रुपये

प्रदत्त पूँजी: 15,84,000 रुपये

उदाहरण 5. एक कंपनी को 5,00,000 रुपये का शुद्ध लाभ हुआ है। इसमें 10,000, 10% पूर्वाधिकार अंश (प्रत्येक ₹100 का) और 50,000 समता अंश (प्रत्येक ₹10 का) हैं। पूर्वाधिकार अंशधारियों को लाभांश का भुगतान करने के बाद, समता अंशधारियों के लिए प्रति अंश कितना लाभांश उपलब्ध होगा?

› पूर्वाधिकार अंशों पर कुल लाभांश की गणना करें: 10,000 अंश * ₹100 प्रति अंश * 10% = ₹1,00,000

› कंपनी के कुल लाभ में से पूर्वाधिकार लाभांश घटाएँ: ₹5,00,000 - ₹1,00,000 = ₹4,00,000

› यह शेष ₹4,00,000 समता अंशधारियों के लिए उपलब्ध लाभांश है।

› समता अंशधारियों के लिए प्रति अंश लाभांश की गणना करें: ₹4,00,000 / 50,000 अंश = ₹8 प्रति अंश

उत्तर – समता अंशधारियों के लिए प्रति अंश ₹8 का लाभांश उपलब्ध होगा।

उदाहरण 6. एक कंपनी ने ₹10 वाले 10,000 अंश सममूल्य पर जारी किए। आवेदन पर ₹3, आबंटन पर ₹3 और प्रथम व अंतिम माँग पर ₹4 देय थे। सभी अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए और राशियाँ विधिवत प्राप्त हुई। जर्नल प्रविष्टियाँ करें।

› पहला चरण: आवेदन राशि प्राप्त होने पर। ₹10,000 अंशों पर ₹3 प्रति अंश के हिसाब से आवेदन राशि मिली। तो बैंक खाता डेबिट होगा और अंश आवेदन खाता क्रेडिट होगा ₹30,000 से।

› दूसरा चरण: आवेदन राशि को अंशपूँजी खाते में हस्तांतरित करने पर। अंश आवेदन खाता डेबिट होगा और अंशपूँजी खाता क्रेडिट होगा ₹30,000 से।

› तीसरा चरण: आबंटन राशि देय होने पर। अंश आबंटन खाता डेबिट होगा और अंशपूँजी खाता क्रेडिट होगा ₹30,000 से। (₹10,000 अंश x ₹3)

› चौथा चरण: आबंटन राशि प्राप्त होने पर। बैंक खाता डेबिट होगा और अंश आबंटन खाता क्रेडिट होगा ₹30,000 से।

› पाँचवाँ चरण: प्रथम व अंतिम माँग राशि देय होने पर। अंश प्रथम व अंतिम माँग खाता डेबिट होगा और अंशपूँजी खाता क्रेडिट होगा ₹40,000 से। (₹10,000 अंश x ₹4)

› छठा चरण: प्रथम व अंतिम माँग राशि प्राप्त होने पर। बैंक खाता डेबिट होगा और अंश प्रथम व अंतिम माँग खाता क्रेडिट होगा ₹40,000 से।

उत्तर – कुल जर्नल प्रविष्टियाँ हो गईं, जिसमें अंश आवेदन, आबंटन और माँग की राशियाँ सही खातों में दर्ज हो गईं।

उदाहरण 7. क्रोनिक लिमिटेड ने 10,000 समता अंश ₹10 प्रत्येक के निर्गमित किए। प्रथम माँग ₹2 प्रति अंश, द्वितीय एवं अंतिम माँग ₹2.50 प्रति अंश। एक अंशधारी जिसके पास 200 अंश थे, उसने द्वितीय एवं अंतिम माँग का भुगतान नहीं किया। द्वितीय एवं अंतिम माँग देय होने तथा प्राप्त होने पर जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए।

› पहला कदम है द्वितीय एवं अंतिम माँग को 'देय' (due) करना। इसके लिए एंट्री होगी:

› समता अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाता Dr. (10,000 अंश x ₹2.50 = ₹25,000)

› समता अंशपूँजी खाते से Cr. (₹25,000)

› दूसरा कदम है जब हमें पैसे 'प्राप्त' होते हैं। यहाँ 200 अंशों पर पैसे नहीं मिले हैं। तो 10,000 में से 200 अंशों पर पैसा नहीं आया, यानी (10,000 - 200) = 9,800 अंशों पर पैसा आया है।

› बैंक खाता Dr. (9,800 अंश x ₹2.50 = ₹24,500)

› बकाया माँग खाता Dr. (200 अंश x ₹2.50 = ₹500)

› समता अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाते से Cr. (₹25,000)

उत्तर – द्वितीय एवं अंतिम माँग देय होने की प्रविष्टि: समता अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाता Dr. ₹25,000; समता अंशपूँजी खाते से Cr. ₹25,000।

द्वितीय एवं अंतिम माँग प्राप्त होने की प्रविष्टि: बैंक खाता Dr. ₹24,500; बकाया माँग खाता Dr. ₹500; समता अंश द्वितीय एवं अंतिम माँग खाते से Cr. ₹25,000।

उदाहरण 8. नमन लिमिटेड ने 20 रुपये प्रति अंश की प्रथम माँग की, लेकिन एक अंशधारी, जिसके पास 200 अंश थे, ने प्रथम माँग के साथ-साथ 30 रुपये प्रति अंश की अंतिम माँग का भुगतान भी कर दिया, जो अभी माँगी नहीं गई थी। अग्रिम माँग की प्रविष्टि करें।

› सबसे पहले, हमें यह देखना है कि अंशधारी ने कितने अंशों पर कितनी राशि अग्रिम में दी है। यहाँ 200 अंशों पर अंतिम माँग की राशि 30 रुपये प्रति अंश एडवांस में दी गई है।

› तो, अग्रिम माँग राशि = 200 अंश * 30 रुपये/अंश = 6,000 रुपये।

› जब अग्रिम माँग प्राप्त होती है, तो बैंक में पैसा आता है, इसलिए बैंक खाता डेबिट होगा।

› यह राशि कंपनी के लिए एक दायित्व है, इसलिए इसे 'अग्रिम माँग खाते' में क्रेडिट किया जाएगा।

› प्रविष्टि होगी: बैंक खाता डेबिट (Bank A/c Dr.) 6,000 रुपये, अग्रिम माँग खाते से (To Calls in Advance A/c) 6,000 रुपये।

उत्तर – बैंक खाता डेबिट 6,000 रुपये; अग्रिम माँग खाते से 6,000 रुपये (200 अंशों पर अंतिम माँग राशि अग्रिम में प्राप्त होने पर)।

उदाहरण 9. एक कंपनी ने 10,000 अंश (₹10 प्रत्येक) जारी किए। आवेदन पर ₹3, आवंटन पर ₹3, और प्रथम व अंतिम माँग पर ₹4 देय थे। कंपनी को 15,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। संचालकों ने 2,000 आवेदनों को पूरी तरह अस्वीकृत कर दिया और शेष आवेदकों को आनुपातिक आधार पर अंशों का आवंटन किया। आवश्यक रोज़नामचा प्रविष्टियाँ करें।

› पहला कदम: बैंक में आवेदन राशि प्राप्त होने पर प्रविष्टि करते हैं। 15,000 अंश * ₹3 = ₹45,000।

› बैंक खाता डेबिट ₹45,000

› अंश आवेदन खाते से क्रेडिट ₹45,000

› दूसरा कदम: आवेदन राशि का समायोजन करते हैं। जारी किए 10,000 अंश, प्राप्त हुए 15,000 अंश।

› अंश पूंजी के लिए: 10,000 अंश * ₹3 = ₹30,000।

› अस्वीकृत आवेदनों को वापस: 2,000 अंश * ₹3 = ₹6,000।

› अतिरिक्त आवेदन राशि जो आवंटन पर समायोजित होगी: (15,000 - 10,000 - 2,000) * ₹3 = 3,000 अंश * ₹3 = ₹9,000। (यानी 13,000 आवेदकों को 10,000 दिए, तो 3000 अतिरिक्त अंशों का पैसा)

› अंश आवेदन खाता डेबिट ₹45,000

› अंश पूंजी खाते से क्रेडिट ₹30,000

› बैंक खाते से क्रेडिट ₹6,000 (अस्वीकृत राशि)

› अंश आवंटन खाते से क्रेडिट ₹9,000 (अधिक राशि समायोजित)

› तीसरा कदम: आवंटन राशि देय होने पर। 10,000 अंश * ₹3 = ₹30,000।

› अंश आवंटन खाता डेबिट ₹30,000

› अंश पूंजी खाते से क्रेडिट ₹30,000

› चौथा कदम: आवंटन राशि प्राप्त होने पर। ₹30,000 देय था, जिसमें से ₹9,000 पहले ही मिल चुका है।

› तो अब बैंक में आएगा: ₹30,000 - ₹9,000 = ₹21,000।

› बैंक खाता डेबिट ₹21,000

› अंश आवंटन खाते से क्रेडिट ₹21,000

उत्तर – सही रोज़नामचा प्रविष्टियाँ ऊपर दिए गए चरणों के अनुसार होंगी, जिनमें ₹6,000 का रिफंड और ₹9,000 का आवंटन पर समायोजन शामिल है।

उदाहरण 10. एक कंपनी ने 10 रुपये के समता अंश (Equity Shares) पर 1,00,000 अंशों का निर्गमन किया। कंपनी को केवल 90,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। न्यूनतम अभिदान 90% निर्धारित किया गया था। इस स्थिति में क्या होगा?

› पहला कदम: देखो कि कितने अंशों के लिए आवेदन मिले। यहाँ 90,000 अंशों के लिए आवेदन मिले हैं।

› दूसरा कदम: यह चेक करो कि क्या यह न्यूनतम अभिदान (Minimum Subscription) की शर्त पूरी करता है। कंपनी एक्ट के अनुसार, कम से कम 90% आवेदन आने चाहिए।

› तीसरा कदम: 1,00,000 का 90% = 90,000 अंश।

› चौथा कदम: क्योंकि 90,000 आवेदन प्राप्त हुए हैं, जो कि न्यूनतम अभिदान के बराबर है, तो कंपनी अंशों का आवंटन कर सकती है।

› पांचवां कदम: कंपनी केवल 90,000 अंशों का ही आवंटन करेगी, भले ही उसने 1,00,000 का प्रस्ताव दिया था।

उत्तर – कंपनी 90,000 अंशों का सफलतापूर्वक आवंटन कर सकती है क्योंकि उसे न्यूनतम अभिदान के बराबर आवेदन प्राप्त हुए हैं।

उदाहरण 11. सोनम लिमिटेड ने 10 रुपये वाले 20,000 अंश 2 रुपये प्रति अंश प्रीमियम पर जारी किए। आवेदन पर 3 रुपये (प्रीमियम सहित नहीं), आबंटन पर 5 रुपये (जिसमें 2 रुपये प्रीमियम शामिल है) और बाकी प्रथम एवं अंतिम माँग पर। सभी अंशों का अभिदान हो गया और सभी राशियाँ प्राप्त हो गईं। आबंटन राशि प्राप्त होने पर जर्नल प्रविष्टि करें।

› पहले आबंटन राशि देय होने की प्रविष्टि बनाएंगे। अंश आबंटन खाता डेबिट होगा कुल राशि से।

› अंशपूँजी खाता क्रेडिट होगा अंकित मूल्य के हिस्से से।

› प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता क्रेडिट होगा प्रीमियम की राशि से।

› 20,000 अंश × 5 रुपये (आबंटन) = 1,00,000 रुपये (डेबिट अंश आबंटन खाते में)

› 20,000 अंश × 3 रुपये (अंकित मूल्य) = 60,000 रुपये (क्रेडिट अंशपूँजी खाते में)

› 20,000 अंश × 2 रुपये (प्रीमियम) = 40,000 रुपये (क्रेडिट प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाते में)

› अब, आबंटन की राशि प्राप्त होने पर: बैंक खाता डेबिट होगा 1,00,000 रुपये से।

› अंश आबंटन खाता क्रेडिट होगा 1,00,000 रुपये से।

उत्तर – बैंक खाता Dr. 1,00,000 रुपये, अंश आबंटन खाते से Cr. 1,00,000 रुपये

उदाहरण 12. एक कंपनी ने अपनी पुरानी मशीन के बदले ₹4,50,000 की कीमत में एक वेंडर से खरीदी। कंपनी इस वेंडर को ₹100 अंकित मूल्य वाले 'स्टेट इक्विटी अंश' जारी करना चाहती है, लेकिन ₹10 प्रति शेयर के डिस्काउंट पर। वेंडर को कितने अंश जारी किए जाएंगे?

› सबसे पहले, हम प्रति शेयर निर्गमन मूल्य निकालेंगे।

› अंकित मूल्य = ₹100

› डिस्काउंट = ₹10

› निर्गमन मूल्य = अंकित मूल्य - डिस्काउंट = ₹100 - ₹10 = ₹90 प्रति शेयर।

› अब, वेंडर को जारी किए जाने वाले अंशों की संख्या निकालेंगे।

› कुल देय राशि = ₹4,50,000

› जारी किए जाने वाले अंशों की संख्या = कुल देय राशि / प्रति शेयर निर्गमन मूल्य

› जारी किए जाने वाले अंशों की संख्या = ₹4,50,000 / ₹90

उत्तर – तो, कंपनी वेंडर को 5,000 अंश जारी करेगी।

उदाहरण 13. राहुल लिमिटेड ने हांडा लिमिटेड से ₹5,40,000 में एक भवन खरीदा। इसका भुगतान ₹100 प्रत्येक के अंशों को निर्गमित करके किया जाएगा। यदि अंशों को 20% प्रीमियम पर निर्गमित किया जाए, तो कितने अंश जारी किए जाएंगे और जर्नल प्रविष्टियाँ क्या होंगी?

› सबसे पहले, हमें यह देखना होगा कि कंपनी को हांडा लिमिटेड को कितनी राशि चुकानी है। यहाँ यह राशि ₹5,40,000 है।

› अब, दूसरा कदम है निर्गमन मूल्य पता करना। अंश का अंकित मूल्य ₹100 है, और 20% प्रीमियम है। तो ₹100 का 20% होता है ₹20। तो निर्गमन मूल्य हुआ ₹100 + ₹20 = ₹120 प्रति अंश।

› अब हम निर्गमित किए जाने वाले अंशों की संख्या निकालेंगे: देय राशि / निर्गमन मूल्य = ₹5,40,000 / ₹120 = 4,500 अंश।

› जर्नल प्रविष्टि करते हैं: पहले भवन खरीदने की प्रविष्टि – 'भवन खाता डेबिट ₹5,40,000' और 'हांडा लिमिटेड क्रेडिट ₹5,40,000' (भवन का क्रय)।

› दूसरी प्रविष्टि, अंश जारी करने की – 'हांडा लिमिटेड डेबिट ₹5,40,000', 'अंशपूँजी खाता क्रेडिट ₹4,500 अंश × ₹100 अंकित मूल्य = ₹4,50,000', और 'प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता क्रेडिट ₹4,500 अंश × ₹20 प्रीमियम = ₹90,000' (4,500 अंशों का ₹120 प्रति अंश की दर पर निर्गमन)।

उत्तर – कंपनी 4,500 अंश जारी करेगी। पहली प्रविष्टि: भवन खाता डेबिट, हांडा लिमिटेड क्रेडिट। दूसरी प्रविष्टि: हांडा लिमिटेड डेबिट, अंशपूँजी खाता क्रेडिट, प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षित खाता क्रेडिट।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह कॉन्सेप्ट बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर कंपनी की विशेषताओं पर सीधा प्रश्न पूछा जाता है, इसलिए इन सभी बिंदुओं को अच्छे से समझकर याद कर लें।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! अंशों द्वारा सीमित और गारंटी द्वारा सीमित कंपनी के बीच का अंतर और सार्वजनिक व निजी कंपनी के बीच के अंतर पर अक्सर सीधा सवाल आता है। इनकी परिभाषाएँ और मुख्य विशेषताएँ अच्छे से याद कर लेना।

• अंशपूँजी की परिभाषा और इसका वर्गीकरण बोर्ड परीक्षा में अक्सर 2-3 नंबर के छोटे प्रश्न के रूप में आता है, इसे अच्छे से समझना।

• यह वर्गीकरण सीधा तुलन-पत्र में अंशपूँजी कैसे दिखाई जाती है, उससे जुड़ा है। हर प्रकार की परिभाषा और उनकी गणना पर ख़ास ध्यान देना, यह बोर्ड परीक्षा में बहुत बार पूछा जाता है।

• पूर्वाधिकार और समता अंशों के बीच के अंतर को, विशेषकर लाभांश की प्राथमिकता और पूँजी वापसी के संबंध में, बहुत अच्छे से याद कर लेना। यह सीधे प्रश्न के रूप में या बड़े केस स्टडी प्रश्न का हिस्सा बनकर बोर्ड परीक्षा में आ सकता है।

• अंश निर्गमन की पूरी प्रक्रिया और हर चरण की जर्नल प्रविष्टियाँ, खासकर न्यूनतम अभिदान से जुड़े नियम, बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत-बहुत महत्वपूर्ण हैं। इन्हें अच्छे से समझ लेना!

• बकाया माँग पर ब्याज की गणना और उसकी प्रविष्टि से जुड़े प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं, इसलिए इसकी जर्नल प्रविष्टियों और ब्याज गणना पर विशेष ध्यान देना।

• अग्रिम माँग की जर्नल प्रविष्टियाँ और तुलन-पत्र में इसका स्थान, खासकर 'अन्य चालू दायित्व' में दिखाना, बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है। ध्यान से पढ़ना और समझना।

• अधि-अभिदान के प्रश्न बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। खासकर आनुपातिक आवंटन (Pro-rata allotment) वाले प्रश्नों में अतिरिक्त आवेदन राशि के समायोजन पर ध्यान दें। जनरल एंट्रीज़ और राशि की गणना, दोनों पर अच्छे से अभ्यास करें।

• न्यून अभिदान और न्यूनतम अभिदान की शर्तों को ध्यान से समझ लेना, क्योंकि बोर्ड परीक्षाओं में इससे जुड़े केस स्टडी या जर्नल एंट्री के प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं।

• बोर्ड परीक्षा में अधि-मूल्य पर निर्गमन की जर्नल प्रविष्टियाँ, खासकर आबंटन के साथ प्रीमियम होने पर, बहुत पूछी जाती हैं। इसके उपयोगों को भी अच्छे से याद रखना!

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधे सवाल आते हैं कि किन परिस्थितियों में कंपनी डिस्काउंट पर शेयर जारी कर सकती है। अपवादों को अच्छे से याद रखना, खासकर 'हरण किए गए अंशों के पुनः निर्गमन' और 'स्टेट इक्विटी अंश' वाले पॉइंट।

• यह टॉपिक जर्नल प्रविष्टियों के साथ अक्सर बोर्ड परीक्षा में पूछा जाता है। प्रीमियम या बट्टे वाले मामलों में अंशों की संख्या की गणना बहुत ध्यान से करना, यहीं बच्चे सबसे ज़्यादा गलती करते हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

› कंपनी: कानून द्वारा निर्मित, पृथक अस्तित्व, सीमित दायित्व, स्थायी उत्तराधिकार.

› कंपनियां दायित्व (अंश/गारंटी/असीमित) और सदस्य संख्या (सार्वजनिक/निजी/OPC) पर वर्गीकृत।

› अंशपूँजी: अंशों द्वारा जुटाई गई कंपनी की कुल पूँजी।

› अधिकृत, निर्गमित, अभिदत्त, माँगी गई, प्रदत्त, अयाचित, आरक्षित पूँजी के प्रकार।

› अंश दो प्रकार के: पूर्वाधिकार (प्राथमिकता, निश्चित लाभांश), समता (मालिक, परिवर्तनशील लाभांश)।

› अंश निर्गमन प्रक्रिया: विवरण-पत्रिका -> आवेदन -> न्यूनतम अभिदान (90%) -> आबंटन और लेखांकन।

› बकाया माँग = अंशधारी द्वारा माँगी गई राशि का भुगतान न करना।

› अग्रिम माँग: अंशधारी द्वारा समय से पहले भुगतान, कंपनी का दायित्व, 12% तक ब्याज।

› अधि-अभिदान: अधिक आवेदन; विकल्प- अस्वीकृति, आनुपातिक आबंटन, या दोनों।

› न्यून अभिदान: आमंत्रित अंशों से कम आवेदन, न्यूनतम 90% आवेदन अनिवार्य।

› प्रीमियम = अंकित मूल्य से अधिक पर अंश जारी करना, राशि SPR खाते में।

› अंशों का बट्टे पर निर्गमन: अंकित मूल्य से कम पर जारी करना; केवल हरण या स्टेट इक्विटी अंशों के लिए मान्य।

› नकद के बदले परिसंपत्ति के लिए अंश जारी करना; अंश संख्या = देय राशि / निर्गमन मूल्य।